ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

धर्म-परिभाषा

एकता का प्रतीक

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

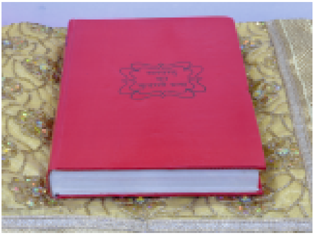

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-82-6

प्रथम संस्करण | अप्रैल, 2025

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

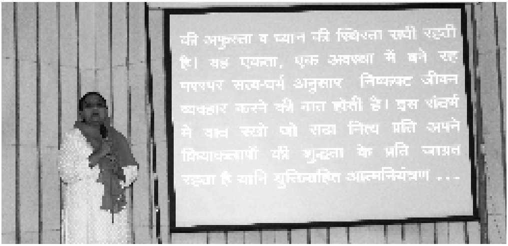

सच्चाई
धर्म
सम

धर्म - परिभाषा

(धर्म - शाब्दिक परिभाषा)

धर्म शब्द की उत्पत्ति 'धृ' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'धारण करना'। इस आशय से वह तत्व **(ईश्वर, प्रकृति, शक्ति, ऊर्जा, सत्ता)** जिसने सम्पूर्ण जगत/विश्व को धारण किया हुआ है तथा जो व्यक्ति व समाज के एकत्व को साकार करता है और जिसे धारण किया जाता है, उसे धर्म कहते हैं। इस संदर्भ में धारणात्मक तत्व के रूप में धर्म से तात्पर्य उन सत्य नित्य नियमों व आचरणों से है, जिससे यह सृष्टि क्रियाशील है तथा जिससे जीवन और जगत संतुलित रहता है।

सरल शब्दों में कहें तो जो धारण करता है, जीवन की रक्षा करता है और अधोगति से बचाता है, वही धर्म है। धर्म वस्तु का वीर्य है अर्थात् सामर्थ्य है, जो उस वस्तु की सतत् रक्षा करता है। वस्तु के रक्षक

इस वीर्य को धर्म इसलिए कहते हैं कि वह वस्तु के द्वारा धृत होता है अर्थात् धारण किया जाता है। धर्म, धर्मी (**यानि अपना धर्म/कर्त्तव्य जानने वाले धर्मात्मा व न्यायी**) को धारण करता है अर्थात् उसका आश्रय व वाहन कहलाता है।

धर्म को अन्य शब्दों में परिभाषित करें तो धर्म से तात्पर्य नियम, विधि-व्यवहार आदि के आधार पर नियत तथा निश्चित उन सब कामों या बातों अथवा आचरण से है, जिनका पालन समाज के अस्तित्व या स्थिति के लिए आवश्यक होता है व जो प्रायः सर्वत्र सार्वजनिक रूप से मान्य होती है। जैसे दया, न्याय, सत्यता आदि का आचरण मनुष्य मात्र का धर्म है। स्पष्ट है धर्म सुकृति या सदाचार का वह पुण्य मार्ग है जिसके द्वारा समाज की रक्षा और सुख-शांति में वृद्धि तो होती ही होती है, साथ ही परलोक में भी उत्तम गति प्राप्त होती है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

धर्म के रास्ते पर चलो,
धर्म का रास्ता बड़ा महान है,
इस में हमारी जीत है।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, बुधवार का पहला बोर्ड, सप्तम सोपान, कीर्तन न० 30)

इसके अतिरिक्त किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति या प्रकृति, जो उसमें सदा रहे, उससे कभी अलग न हो, को भी धर्म कहते हैं। इस तरह धर्म पदार्थ का वह मूल स्वाभाविक गुण/प्रकृति या स्वभाव है, जो उसका सनातन तत्व और मूल लक्षण कहलाता है। जैसे आंख का धर्म है देखना, शरीर का धर्म है नष्ट होना, सर्प का धर्म है काटना, दुष्ट का धर्म है दुःख देना, अग्नि का धर्म है दाहकता।

इस अर्थ से प्रत्येक वस्तु को जिस प्रयोजन के लिए रचा गया है उस प्रयोजन की परिपूर्ति करना ही उस वस्तु का धर्म कहलाता है व धर्मयुक्त वस्तु ही अनमोल और उपयोगी मानी जाती है। इस बात को

समझने के लिए यदि हम मानव का उदाहरण लें तो ज्ञात होता है कि मानव का धर्म है मानवता। समस्त मानवोचित गुण इस धर्म के अंतर्गत आते हैं। निश्चित रूप से मानवता - मर्यादित आचरण करने का दूसरा नाम है। मर्यादा - विधि **(यह करो)** एवं निषेध **(यह मत करो)** दोनों का निर्धारण करती है अर्थात् धर्म अनिवार्य रूप से करणीय/अकरणीय, करो/मत करो, सत्-असत्, पाप/पुण्य में भेद करना सिखाता है इसलिए इसे उचित-अनुचित का विचार करने वाली चित्त वृत्ति, न्याय बुद्धि, विवेक व ईमान के नाम से भी जाना जाता है।

ज्ञात हो धर्म के इस मर्मज्ञ भेद को समझ, स्वधर्म की पालना करने वाला धर्मबुद्धि इंसान ही, अभिमानपूर्ण प्रयत्नों के परिणाम की विपरीतता को देखते हुए, सांसारिक भोगों की चेष्टा से निवृत्ति प्राप्त कर, इस जीवन में अभ्युदय यानि उन्नति और मृत्यु के बाद निःश्रेयस अथवा कल्याण यानि मोक्ष की प्राप्ति कर पाता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

सत् असत् दा विचार जेहड़ा करदा,
सत् सत् बात इन्सान ओ फड़दा।
सच्चाई धर्म दे विच ओ विचरदा,
श्री राम जी दे दर्शन ओ करदा।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, षष्ठम सोपान,
कीर्तन न० 7)

स्पष्ट है, धर्म वह कर्म है जिसका करना किसी सम्बन्ध, स्थिति या गुण विशेष के विचार से उचित और आवश्यक होता है तथा जिसका फल शुभ होता है। यही नहीं किसी जाति, कुल, वर्ग व पद इत्यादि के लिए उचित ठहराया हुआ कार्य या व्यवहार भी धर्म कहलाता है, जिसे कर्त्तव्य कहते हैं। जैसे माता-पिता का धर्म या कर्त्तव्य, पुत्र का धर्म या कर्त्तव्य, राजा का राजधर्म अथवा कर्त्तव्य। कर्त्तव्य के रूप में अभिव्यक्त इस धर्म की पालना के निमित्त ही परमेश्वर कहते हैं:-

फ़र्ज़ अदा हस कर करो।
फ़र्ज़ अदा को सच्चाई धर्म से निभाओ।

(साजन जी के पत्र सभाओं के नाम)

अर्थात् गृहस्थ आश्रम में रहते हुए व परिवार, समाज, देश व अखिल विश्व के हित को ध्यान में रखते हुए अपने स्वार्थी व परमार्थी दोनों प्रकारों के शास्त्र विहित् उत्तरदायित्वों/कर्त्तव्यों अथवा स्वधर्म का निर्वहन, सत्यतापूर्वक अकर्त्ता भाव से प्रसन्नतापूर्वक करो। जानो इस प्रकार कर्त्तव्यनिष्ठा से निष्कामतापूर्वक अपने नैतिक धर्म का पालन करने से एक तो आत्मसंतोष व अखंड शांति की प्राप्ति होती है दूसरा नितोनित अपने आप को पकड़ते हुए निरंतर कर्त्तव्य-पथ पर आगे बढ़ते रहने से आत्मकल्याण का मार्ग भी खुल जाता है। जैसा कि कहा भी गया हैः-

गृहस्थ धर्म विच रह के, अपने आप नूं पकड़ो,
फिर फ़र्ज़ अदा तुसां हस के करो
हस के करो, उस ईश्वर दे घर है सब कुछ,
उस ईश्वर दा द्वारा आके फड़ो

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम (द्वितीय)
कीर्तन न० 16)

स्पष्ट है सजनों, धर्म नैतिक नियमों अथवा आदर्शों व सदाचार का मूल तो है ही, साथ ही जीवन के परम पुरुषार्थों में से भी एक है जो आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानने में विश्वास तथा इन विश्वासों के अनुसार आचार-व्यवहार को अभिव्यक्त करता है। इसलिए शास्त्रविहित् ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विचार, इन्द्रिय-संयम व शीलयुक्त आचरण तथा अनासक्त अथवा निष्काम भाव से नियत कर्म करना धर्म के अंतर्गत आता है।

(सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार-धर्म)

जानो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है:-

'धर्म क्या है, निष्काम रास्ता'

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, बुधवार का पहला बोर्ड, सप्तम सोपान, कीर्तन न० 30)

अर्थात् धर्म - जीवन का प्रत्येक कर्त्तव्य, हर प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा से रहित होकर यानि कर्म फल का त्याग कर, अकर्त्ता भाव से विधिसम्मत् नीति नियमों अनुसार कुशलतापूर्वक सम्पादित करने का नाम है। अतः स्वयं तो कर्म को सर्वोत्तम कर्त्तव्य मानकर धर्म के निष्काम रास्ते पर चलो ही, साथ ही अन्यों को भी अधर्म का रास्ता छुड़ा धर्म का रास्ता दिखाने वाले धर्मपाल कहलाओ। जैसा कि कहा भी गया हैः-

कामना से रहित,
जो कुरस्ते पड़े सजन को रास्ते पर लावेगा,
वही पर उपकारी नाम कहावेगा।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, बुधवार का पहला बोर्ड,
सप्तम सोपान, कीर्तन न० 30)

इस प्रयोजन में सफलता प्राप्त करने हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें सतर्क करते हुए कहता हैः-

धर्म ते चलीं, अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, प्रथम सोपान, भजन न० 19)

अर्थात् प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन करने हेतु तत्क्षण अविचारयुक्त, निकृष्ट, नीच व खोटे कर्म करना बंद कर दो और धर्म के विचारयुक्त सुमार्ग पर सीधे चल पड़ो क्योंकि धर्म सरलता/सहजता व समता का पोषक है व अधर्म कुटिलता व विषमता का। धर्मजन्य सुख है और अधर्मजन्य दु:ख। शास्त्रानुकूल कार्य करना धर्म है और शास्त्र निषिद्ध कर्म करना अधर्म। धर्म पालना से जीवन व जगत की स्थिति संभव, सुचारु और संतुलित रहती है और अधर्म से असंतुलन पनपता है। सरल शब्दों में जिससे परिणाम में अपना और दूसरों का हित हो, वास्तव में वही धर्म है और जिससे परिणाम में अपना और दूसरों का अहित हो, वही अधर्म है। इस बात को समझते हुए सजनों सत्य

का अनुसरण करो क्योंकि सत्य से बड़ा धर्म कोई नहीं और असत्य से बड़ा अधर्म नहीं। सब जानते-बूझते हुए कहीं हम वर्तमान हालातों के वशीभूत हो अधर्म मार्ग पर न चढ़ बैठें इस हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें अधर्मयुक्त पाप मार्ग पर चलने का परिणाम बताते हुए कहता है:-

धर्म दा मार्ग छड के सजनो
अधर्म दे मार्ग क्यों जांदे हो
पाप दी बेड़ी डुबनी जे,
क्यों धर्म नू नहीं पहचानदे हो
धर्म दी ताकत बड़ी बलवान,
धर्म दे मार्ग चढ़े श्री राम
अपने प्यारियां दी लाज बचाके
अधर्मियां दा खातमा करन तमाम
धर्म दे मार्ग चढ़े हनुमान,
उसी मार्ग मिल पए श्री राम
ओ दुष्टां नूं मार मुकावे,
गदा ओन्हां दा है जे तुफान

धर्म दे मार्ग चढ़ पिया,
चढ़े विभीषण राज जी
उसी मार्ग में मिले श्री रामचन्द्र महाराज जी
अमर ओ हो गया लंका दा पाया उस राज जी
चलदे चलो चलदे चलो धर्म दे मार्ग है जित तुम्हारी
चलदे चलो सजनों मुख न मोड़ो,
उस मार्ग मिलन श्री राम बिहारी
मिलन श्री राम जगत भंडारी
धर्म दा रस्ता धर्म दा मार्ग है जे ओ महान
पौड़ी -पौड़ी चढ़दे जाओ सजनों पावो अपना स्थान
कैसा ओथे है विश्राम

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान पंचम,
कीर्तन न० 77)

निष्कर्ष

आप भी सजनों विभिन्न युग पुरुषों की भांति धर्म मार्ग पर चलते हुए, विश्राम पा सको इस हेतु निज शाश्वत धर्म में दृढ़ विश्वास और श्रद्धा रखते हुए व उसका कुदरती विधि अनुसार सत्यनिष्ठा से पालन

करते हुए उसकी रक्षा करो यानि किसी भी विषम परिस्थिति व अवस्था के वशीभूत होकर अपना धर्म हारने की भूल कदापि मत करो अपितु इसके स्थान पर धर्म की रक्षा करने वाले धर्मवीर बनके दिखाओ यानि धर्म पर अपना तन-मन-धन सब वारने की क्षमता दर्शाओ। यहाँ याद रखो कि जो शारीरिक सुन्दरता को प्राथमिकता देने के भाव को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लेता है, वह तन से हार जाता है। जो इच्छाओं का गुलाम हो जाता है, वह मन से हार जाता है और जिसमें ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करने का लोभ बढ़ जाता है, वह मोह-माया में फँस, धन से हार जाता है। धर्मवीर बनने हेतु आपने इनमें से किसी से भी नहीं हारना क्योंकि शास्त्र कह रहा है:-

धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर सजनों तन मन धन सब वारना रे।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम (प्रथम) कीर्तन न० 3)

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

Learn the science of inner dimensions
at **Dhyan-Kaksh**
School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

मानवता के गुण

- संतोष-परिभाषा
- संतोष विकसित करने का साधन
- धैर्य-परिभाषा
- धैर्य का व्यावहारिक रूप
- धीर व्यक्ति की पहचान व धैर्य धारणा से लाभ
- सत्य-परिभाषा
- सत्य को विकसित करने का साधन
- सत्-संगति की महत्ता
- सत्यभाषी बनने की महत्ता
- धर्म-परिभाषा
- धर्म का विषय एवं उद्देश्य
- धर्म के निमित्त समर्पण
- निष्कामता-अर्थ
- निष्काम रास्ते की बाधा एवं उससे उबरने की युक्ति
- परोपकार

चित्त-वृत्तियों के निरोध का साधन

- अभ्यास-अर्थ
- अभ्यास सफलता का मूल
- वैराग्य
- वैराग्य-कसौटी
- मौन-अभिप्राय
- मौन और वाणी
- मौन का जीवन महत्त्व

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक
(QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

INTERNATIONAL OPEN ORATORY CONTEST
www.dhyankaksh.org

INTERNATIONAL OPEN POETRY RECITATION CONTEST
www.dhyankaksh.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695
Email: contact@dhyankaksh.org
Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Disclaimer: The contents of this book are intended to foster universal human values, consciousness, fraternity, and love for humanity without endorsing or promoting any specific religious belief